(1)

प्रश्न — भाषा-विज्ञान का क्षेत्र (विषय-क्षेत्र) निरूपित कीजिए?

(अथवा)

भाषा विज्ञान में अध्ययन के अंगों अथवा विभागों का संक्षेप में परिचय दीजिए और उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:— भाषाविज्ञान का विषय-क्षेत्र, जैसा कि इसकी परिभाषा से विदित है, भाषा से सम्बन्धित है, जिसमें भाषा का ~~वि~~ वैज्ञानिक स्तर पर भाषा का उद्भव और विकास, भाषाओं की पुनर्रचना जैसे भारोपीय भाषा की पुनर्रचना और भाषा मात्र के लिए सामान्य नियमों का अध्ययन-विश्लेषण किया जाता है।

वस्तुतः भाषा जहाँ विचार विनिमय का आवश्यक साधन है, वहाँ यह एक जटिल व्यापार भी है। यह जटिलता निरन्तर बढ़ती है। जब हम मातृ-भाषा के सम्बन्ध में भी अधिक नहीं जानते हैं तो विदेशी भाषा के सम्बन्ध में तो और भी अधिक कठिनाई हमारे सम्मुख आती है। यह जटिलता निरन्तर बढ़ती जाती है, जब भी हम किसी भाषा के सम्बन्ध में सूक्ष्म दृष्टि से सोचते हैं। शब्द-समूह कैसा व कितने प्रकार का है, ध्वनियाँ किस प्रकार की हैं, उनका ~~सामान्य~~ गठन कैसा है, उसके गठन के विशिष्ट नियम क्या हैं, प्रयोग भेद का रचना पर क्या प्रभाव पड़ता है, ध्वनियों में परिवर्तन के क्या कारण हैं एवं किस दिशा में ये परिवर्तित हैं। भाषा किस प्रकार से विकसित होकर आगे आई है आदि-आदि। वास्तव में भाषा एक संहति है और भाषा~~वै~~वैज्ञानिक उपर्युक्त सभी बातों का भाषा के सन्दर्भ में अध्ययन करता है और अनेक मान्यताएँ समक्ष रख कर विवेचन और विश्लेषण में लगता है यही भाषाविज्ञान का विषय और क्षेत्र है जिसके अन्तर्गत भाषा और उससे सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन-विश्लेषण, नियमन और निष्कर्षण किया जाता है।

उपर्युक्त के आधार पर हम अपने अध्ययन को (क) प्रधान या मुख्य और (ख) गौण — दो विभागों या अंगों में कर सकते हैं। इससे भी पूर्व अनेक विद्वानों ने सामान्यतः भाषा के स्तर — बाह्य और आन्तरिक माने हैं जिसमें बाह्य के अन्तर्गत ध्वनि शब्द और वाक्य

[illegible] आन्तरिक के अन्तर्गत अर्थ [illegible]

सुविधा एवं महत्व की दृष्टि से प्रधान या मुख्य और गौण – दो भागों में विभाजित किया जाता है।

(क) प्रमुख या मुख्य अंग अथवा विभाग

(1) ध्वनि विज्ञान (Phonetics) – ध्वनि विज्ञान के अन्तर्गत हम ध्वनियों का विभिन्न दृष्टियों से अध्ययन करते हैं। इसके अन्तर्गत (i) उच्चारण मूलक ध्वनि विज्ञान (Articulatory Phonetics) जिसके अन्तर्गत ध्वनि से सम्बन्धित अवयवों – मुख, विवर, नासिका-विवर और ध्वनि-यन्त्र आदि, ध्वनि का उत्पन्न होना और श्रवण आदि आते हैं। (ii) ध्वनि प्रक्रिया – इसके अन्तर्गत दूसरा उप-विभाग आता है जिसमें ध्वनि-परिवर्तन या ध्वनि-विकार के कारणों एवं दिशाओं का विवेचनात्मक अध्ययन होता है, जबकि प्रथम के अन्तर्गत किसी भाषा की ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है यह दो प्रकार का – ऐतिहासिक और तुलनात्मक होता है। इसके अन्तर्गत ध्वनि सम्बन्धी नियम भी आते हैं जैसे – ग्रिम का ध्वनि-नियम आदि। ध्वनि-विज्ञान के अन्तर्गत किसी भाषा की (Phonemics) आदि उप विभाग भी हैं जिसके अन्तर्गत किसी भाषा की ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है।

(2) वाक्य विज्ञान – (Syntax) – भाषा का कार्य विचार विनिमय है जिसका माध्यम वाक्य है। इससे भाषा की इकाई भी वाक्य है अतः वाक्य ही भाषा का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। भाषाविज्ञान में वाक्य के अध्ययन के विभाग को 'वाक्य-विज्ञान' या 'वाक्यविचार' कहा जाता है। इसके अन्तर्गत वाक्य-रचना, पद-क्रम, निकटस्थ अवयव, अन्वय, परिवर्तन के कारण और दिशाएं केन्द्रकता आदि की दृष्टि से वाक्य का अध्ययन किया जाता है। इसके तीन रूप हैं – (i) समकालीन (ii) ऐतिहासिक और (iii) तुलनात्मक।

Scanned with CamScanner

यह विभाग बहुत कुछ बोलने वाले समाज के मनोविज्ञान के आश्रित होने के कारण अन्यों (विभागों) की अपेक्षा कठिन है।

(3) रूप विज्ञान (Morphology) — इस विभाग के अन्तर्गत रूप तत्वों का विवेचन होता है। इसे 'रूपविचार' 'पदविज्ञान' या 'पद-रचना' शास्त्र भी कहते हैं। इस विभाग के अन्तर्गत भाषा के वैयाकरणिक रूपों के विकास कारण तथा धातु उपसर्ग, प्रत्यय विभक्ति आदि का अध्ययन किया जाता है। लिंग, वचन, काल आदि से सम्बन्धित परिवर्तनों का अध्ययन भी इसी के अन्तर्गत होता है। रूप-निर्माण प्रक्रिया भी इसके अन्तर्गत आती है। यदि कहना चाहें तो कह सकते हैं कि रूप-परिवर्तन-मूलक (Inflexional) और व्युत्पत्तिमूलक (Derivational) परिवर्तनों का अध्ययन इसी के अन्तर्गत होता है जो समकालिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक — तीनों ही प्रकार का हो सकता है।

(4) अर्थविज्ञान (Semantics) अर्थ भाषा का आन्तरिक पक्ष है जिसे आत्मा की संज्ञा भी दी जाती है। भाषा सार्थक व्यवस्था होने के कारण उसकी प्रयोजनीयता अर्थ के द्वारा ही सम्भव है। कुछ विदेशी विद्वान जिनमें अमेरिकी अग्रगण्य हैं, अर्थ को भाषाविज्ञान का विषय न मानकर दर्शन अथवा मनोविज्ञान की प्रवृत्ति मानते हैं। किन्तु ऐसा मानने का तात्पर्य होगा, ध्वनियों को निरर्थक मान लेना, किन्तु ऐसा मान लेना भी सार्थक नहीं है, क्योंकि सम्प्रेषणीयता भाषा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसी, ध्वनि, वाक्य रूप और शब्द भाषा के शरीर मात्र का कार्य करते हैं। उसकी आत्मा तो 'अर्थ' ही है जिसके अध्ययन के बिना भाषा का अध्ययन अधूरा-सा ही रह जायगा। साथ ही, वर्णनात्मक अर्थ-विज्ञान और संरचनात्मक अर्थ-विज्ञान के अस्तित्व में आ जाने से भ्रान्त धारणा अब समाप्त होती जा रही है। इसी समाज मनोविज्ञान के साथ अर्थ और उसके विकास के कारण आदि जुड़े हैं। शब्दों के अर्थ और उसके परिवर्तन के कारण, अर्थ और ध्वनि के

सम्बन्ध पर्याय और विलोम आदि का समकालिक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अध्ययन किया जा सकता है। इसके अन्य नाम 'अर्थ-विचार' और 'अर्थ-उद्बोधन शास्त्र' भी है।

(5) शब्दविज्ञान (Wordalogy) — यह विभाग परम्परा से हटकर डॉ० भोलानाथ तिवारी ने ही किया है। देश-विदेश के अन्य विद्वानों ने रचना के अन्तर्गत ही शब्दों पर विचार किया है; किन्तु शब्दों का वर्गीकरण किसी भाषा के शब्द समूह में परिवर्तन के कारण एवं दिशाओं का अध्ययन, शब्द समूह, कोश विज्ञान और व्युत्पत्ति शास्त्र इसी विभाग के अध्ययन के अंग हैं। व्युत्पत्तियों के अध्ययन के समय शब्दों का तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन भी किया जाता है।

(ख) गौण विभाग या अंग

~~भाषा के प्रमुख अंगों पर जो प्रकाश डाले है वह~~
~~अब तक भाषा के सहायक होने के कारण गौण में रखे जाते हैं~~

भाषा विज्ञान के प्रमुख अंगों पर प्रकाश डाले किन्तु इनके अतिरिक्त भी कुछ ऐसे विषय हैं जिनका अध्ययन भाषाविज्ञान के अन्तर्गत नहीं आते, उन्हें हम गौण विभागों में रखते हैं। ऐसे यों उनका महत्व भी कम नहीं है, किन्तु वे भाषा के सहायक होने के कारण गौण में रखे जाते हैं।

(1) भाषा की उत्पत्ति (Origin of Language) — भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न स्वाभाविक, सहज, आवश्यक किन्तु विचित्र है। भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न स्वाभाविक, सहज, आवश्यक किन्तु विचित्र है। भाषा की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों ने तरह-तरह के प्रश्नों का समाधान करके विचारों को [illegible] कर अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। और गुणों का कथन, "इसमें भाषा की उत्पत्ति तथा उसमें विकास एवं परिवर्तन के कारण आदि अन्य बड़े प्रश्न भी आते हैं, इस प्रकार इसकी समस्या गत्यात्मक है। यह केवल भाषा का